Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

धार : निम्नवर्गीय मैना की कहानी

सुनील कुमार कुशवाहा
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड
ई–मेल– sk2357313@gmail.com

Paper Received On: 20 May 2024
Peer Reviewed On: 24 June 2024
Published On: 01 July 2024

संजीव का 'धार' नामक उपन्यास प्रकाशन क्रम में चौथा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1990 ई0 में राधाकृश्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। संजीव ने इस उपन्यास में झारखण्ड के बांसगड़ा, छोटा नागपुर, संथाल, परगना आदि क्षेत्रों के कोयला की खदानों में काम करने वाले आदिवासी मजदूरों का चित्रण यथार्थवादी धरातल पर किया है। उपन्यासकार ने आदिवासी, मोची, बाहुरी तथा गुलगुलिया आदि मजदूरों का कोयला माफियाओं, धर्मगुरुओं, ओझा, ठेकेदारों तथा पुलिस आदि द्वारा किये जाने वाले भोशण को इस उपन्यास के केन्द्र में रखा है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र और नायिका मैना है। मैना का पिता संथाली है तथा माता गुलगुलिया है। लेखक ने इस उपन्यास को दो भागों में बाँटा हुआ है। पहले भाग में आदिवासियों का जीवन तथा प्रशासन व धर्मगुरुओं द्वारा गरीब आदिवासियों पर किया गया अत्याचार दिखाया गया है। आदिवासी मैना के बाप का नाम टेंगर तथा पति का नाम फोकल है। टेंगर अपने आप को धर्मात्मा समझकर तथा पूँजीपति महेन्द्र बाबू की बातों में आकर अपनी जमीन महेन्द्र बाबू को दान में दे देता है। ठेकेदार महेन्द्र बाबू उस जमीन पर तेजाब की फैक्ट्री लगा देता है। उस तेजाब के कारखाने से जहरीली गैस, जहरीला पानी तथा दूशित राख निकलने लगती है। जिसका दुश्परिणाम यह निकलता है कि वहाँ के तालाब एवं कुएँ का पानी भी विशैला हो जाता है। आदिवासियों को शुद्ध पीने तक का पानी नसीब नहीं होता है। दूशित पानी पीने से लोग अनेक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बीमारियों के शिकार होने लगते हैं। जमीन बंजर हो जाती है। पेड़–पौधे तथा फसलें सूख जाती हैं। तब मैना इस स्थिति से अत्यधिक व्यथित होकर अपने पिता टेंगर, पति फोकल तथा कारखाने के मालिक महेन्द्र बाबू के विरूद्ध विद्रोह कर देती है। मैना द्वारा छेड़े गये संघर्श में अनेक आदिवासी गरीब मजदूर भी शामिल हो जाते हैं। तब कोई रास्ता न पाकर ठेकेदार महेन्द्रबाबू उस क्षेत्र के ओझा से मिलकर तथा उसे मोटी रि वत देकर मैना को डायन घोशित करवा देता है। आदिवासियों की ये कुप्रथा रही है कि जिसे डायन घोशित किया जाता है, उसे तब तक पत्थर मारा जाता है, जब तक वह मर न जाय। गाँव के लोग ओझा की बातों का विश्वास कर लेते हैं। मैना समझ जाती है कि ये सब ओझा का ही किया कराया है। वह अपनी निडरता का परिचय देते हुए ओझा की गरदन पकड़ कर कहती है कि– ''खा जाहिर थान का कसम! खा माराँ बुरू का कसम!..... कि तू घूस नहीं खाता है, सच बोल रआ है। अरे ओकरा में तो तोर चेहरा लौक रहा है तो तू हो गया डाइन।"[50]

इस उपन्यास की शुरूआत मैना के जेल से छूटने से होती है। मैना को जेल इसलिए जाना पड़ा था क्योंकि उसने तेजाब कारखाने के विरोध में संघर्श किया था। पूँजीपति महेन्द्र बाबू पुलिस प्रशासन से मिलकर मैना को झूठे आरोप में फँसाकर जेल भेजवा दिया था। जेल में जेलर के द्वारा मैना का बलात्कार किया जाता है। मैना अपना गर्भपात नहीं करवाती है, बल्कि उस बच्चे को पालती रहती है। वह उसे सकुशल पैदा भी करती है। इस तरह अगर देखा जाय तो आदिवासी मैना स्त्री–विमर्श के इस दौर में कई दृश्टियों से नई–नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। जेल से छूटने के बाद मैना, बच्चा और मंगर तीनों उसी गाँव में लौटते हैं। संजीव के शब्दों में– ''दूर से आता देखकर नंग–धड़ंग बच्चों का काफिला झुग्गियों से निकल–निकल कर ताकने लगा। कुछ एक–एक दौड़े भी, लेकिन करीब जाकर एक अजनबी की मौजूदगी भाँप कर वे जहाँ के तहाँ जड़ हो गये। अब कुछ बड़ी आकृतियाँ निकलीं–हाफ पैन्ट, धोती, गंजी या नंगे बदन, कुछ साड़ियों से लिपटी बदहाली की मूरतों–सी। अँधेरे में वह कतार कच्ची भीत के खण्डहर से कटी–फटी नजर आ रही थी।"[51]

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मैना ने अपने पति तथा पिता को छोड़ दिया था, क्योंकि ये दोनों ठेकेदार महेन्द्र बाबू के दलाल थे। इस उपन्यास में संजीव ने धार्मिक अंधवि वास को भी भरपूर स्थान दिया है। धर्म के नाम पर गरीबों, मजदूरों एवं अनपढ़ लोगों का किस तरह भाोशण किया जाता है, यह जानगुरु ओझा के माध्यम से लेखक द्वारा इंगित किया गया है। आदिवासी मैना बताती है कि उसकी माँ को गाँव वालों ने डायन कहकर गाँव से भगा दिया। तेजाब की फैक्ट्री में पानी पीकर श्याम की भैंस मर जाती है, तब ओझा शाल के पत्ते में तेल लगाकर मंतर पढ़ता है और कहता है कि मैना की माँ डायन है, उसी ने उस भैंस को मारा है। अंधवि वास के कारण ही आदिवासी उसे डायन मान लेते हैं तथा उसे पीट–पीटकर गाँव से बाहर निकाल देते हैं। गाँव की दयनीय जिंदगी से परेशान होकर मैना गाँव के लोगों से कहती है कि– ''हमारा कोई पता–ठिकाना नईं।..... लेकिन हम बोलता रजिस्टर में सब है, ई बांसगड़ा भी, गाँव का मालिक भी है, मुखिया, महेन्दर बाबू जो हिंया हम दलित्तर लोग का साथ नई रएता, उसको गैस में जलना नई पड़ता और भी बहोत कुछ है। मगर हमारा खातिर नई। कायें नई इस खातिर कि हम अपना किस्मत उनके पास बंधक रख छोड़ा है? कोइला का खजाना पे हम रएता है, फिर भी कंगाल? कब तक अइसा माफिक चलेगा?''[52] जबसे मैना के जीवन में मंगर आया था, तबसे वह उसे लेकर अपनी नयी जिन्दगी भाुरू करने के सपने देखने लगी थी। परन्तु अब उसके सपने टूटकर बिखरने लगे थे क्योंकि धीरे–धीरे मंगर उससे दूर होने लगा था। मैना अपनी इस हार को अपने संघर्श में रुकावट नहीं बनने दी। वह लगातार शोशण और अत्याचार के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद ही किये रखी।

'धार' उपन्यास के दूसरे भाग में लेखक ने मैना के द्वारा शोशण, भुखमरी तथा बेरोजगारी के विरूद्ध किये गये संघर्श का अंकन किया है। मैना के समझाने पर अधिकतर आदिवासी मजदूर तेजाब फैक्ट्री में काम करने नहीं जाते हैं। फलस्वरूप फैक्ट्री बंद हो जाती है, फिर भी कोयला खनन का अवैध काम शुरू ही रहता है। इसी समय अविनाश शर्मा नाम का एक व्यक्ति मैना के साथ खड़ा हो जाता है। वह वामपंथी विचारों से भरा–पूरा होता है। वह भी मजदूरों के साथ मिलकर संघर्श करता है। अविनाश शर्मा आदिवासियों को जागरूक करने के लिए संथाल परगना के गाँव–गाँव में घूमता है। लेखक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के शब्दों में– ''इसके बाद लगातार कई यात्राओं में शर्मा ने उसे संथाल परगना के गाँवों से परिचित कराया। उसे यह देखकर हैरानी हुई कि गाँव प्रायः उजाड़ हो चले थे। साइकिलों पर बोरे में बाँध कर भेड़ें और बकरे..... या घर के मुर्गे और मुर्गियों को बाजार में बेचने ले जाते हुए उसे अक्सर आदिवासी दिख जाते।''[53] मैना अविनाश शर्मा और कुछ आदिवासियों के साथ मिलकर एक जनखदान का निर्माण करती है। आदिवासियों की मेहनत व ईमानदारी से जनखदान विकास के चरम तक पहुँच जाती है। संगठन पूरी निश्ठा से इस जनखदान का राश्ट्रीयकरण कराना चाहता है। सरकार के अधिकारी जनखदान का राश्ट्रीयकरण करने के लिए अविनाश शर्मा से रि वत के रूप में 20 हजार रूपये मांगते हैं। शर्मा जी मजदूरों से ये बात बताते हुए कहते हैं कि ''बोलते हैं बीस हजार दो तो परमीशन दें, रात को चोरी से कोयला काटने का..... बीस हजार?..... हियाँ दस दिन से एक भी आदमी मजूरी नहीं लेता, घर से खा–पी के इसको खड़ा किया और आज कोयला निकलने का बखत आया तो इनको दे दें बीस हजार! जाके मुर्गा बोतल और रंडी के साथ मौज करें, वाह रे!''[54] सरकारी कर्मचारी जनखदान का राश्ट्रीयकरण करने के बजाय ठेकेदार महेन्द्र बाबू से रिश्वत लेकर उसकी अवैध कोयला खदान का राश्ट्रीयकरण कर देते हैं। सरकार मैना के खदान पर बुलडोजर चलवाकर नश्ट कर देती है। लेखक बीर भारत तलवार कहते हैं कि– ''वास्तविक खदान को भी सरकार ने इसी तरह नश्ट करवा दिया था। संजीव ने जनखदान से सम्बन्धित घटनाओं का हू–ब–हू चित्रण किया है।''[55] ईमानदारी से बनी जनखदान पर बुलडोजर चलाने का वर्णन संजीव अपने भाब्दों में करते हुए कहते हैं–''बुलड़ोजर 'इन्दिरा गाँधी जनकल्याण खदान' को पाटने गया है। सामने इन्दिरा जी का आशीर्वाद देता हाथ है, जैसे ट्रेफिक का सिग्नल हो। बुलड़ोजर ठिठक जाता है। आगे नहीं बढ़ता, वापस मुड़ता है। अरे, भागो, भागो, जनखदान की ओर आ रहा है।''[56] उपर्युक्त कुकृत्य से संजीव यह दिखाना चाहते हैं कि ईमानदारी और मेहनत से जीने वाले लोगों की कोई अहमियत नहीं बल्कि जो बेइमानी और रिश्वतखोरी के बल पर जीवन जीते हैं, वे अधिक रसूखदार एवं वर्चस्व वाले होते हैं, सब उन्हीं की दुहाई देते हैं।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समाज में गरीब तथा मजदूर वर्ग का भाोशण व अत्याचार करने वाले लोगों का मुकाबला आसानी से तभी किया जा सकता है, जब भाोशक वर्ग का साथ देने वाला कोई अपना न हो। अगर कोई अपना व्यक्ति पूँजीपति वर्ग का साथ देता है, अपनों का भेद प्रकट करता है, उनकी जी हुजूरी करता है, तब संघर्श के द्वारा परिवर्तन की कल्पना बेमानी होगी। यही हाल विद्रोही मैना का भी था। उसका पिता टेंगर व उसका पति फोकल दोनों महेन्द्र बाबू के दलाल थे। मैना के लिए सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह अपनों से लड़े या फिर भाोशक वर्ग से लड़े। वह फोकल के विशय मे अच्छी तरह जाती थी कि जब भी वह दिखाई दे गया, उस दिन कोई न कोई समस्या जरूर उत्पन्न हो जाती। एक दिन फोकल के दिखाई देने पर मैना उसके पीछे हो लेती है। लेखक के भाब्दों में ''उसे यह भी सुधि न रही कि वह नंगी है। धड़कते हुए दिल से वह टोह लेती आगे बढ़ती गयी। सारी माँदें जुड़कर लम्बा गलियारा बन चुकी थीं। बंसी के छेद की तरह अलग–अलग मुहानों से बहुत ही धूसर–सा उजाला उसे डरा रहा था। वह फिर लौट रही थी, वर्शों बन्द खदानों की भूल–भूलैया में, बचपन में इसी तरह नंगे वह फोकल को ढूँढ़ा करती थी। फोकल कहाँ चला गया? उसने रूक कर आवाजें अकनने की कोशिश की। हाँ, ऊपर शोर था–दूर से आता हुआ। तो महेन्दर बाबू सारी माँदों पर कब्जा जमाने में कामयाब हो गये? फोकल कहाँ चला गया? उसने रुक कर आवाजें अकनने की कोशिश की। हाँ, ऊपर शोर था–दूर से आता हुआ तो महेन्दर बाबू सारी माँदों पर कब्जा जमाने में कामयाब हो गये? फोकल की कमीनगी कामयाब हो गयी? अब क्या करेगी वह? बच्चा फुक्का मार कर रो रहा था, मगर मैना रो भी नहीं रही थी। सारा कुछ जम गया था अन्दर ही अन्दर।''[57]

संजीव ने 'धार' उपन्यास के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि पूँजीपति, अधिकारी एवं दलाल सब मिलकर राश्ट्रीय सम्पत्ति को लूट कर अपनी जेब भर रहे हैं। वह व्यवस्था चाहे सरकारी हो या फिर व्यक्तिगत, हर जगह भ्रश्टता एवं दुर्व्यवस्था फैली हुई है। लाचार और बेबश बने हैं तो सिर्फ गरीब व मजदूर वर्ग। 'धार' का अर्थ है लगातार गिरते रहना। 'धार' नामक उपन्यास भाोशित एवं पीड़ित वर्ग को यह सीख देता है कि तुम भाोशण एवं अन्याय के खिलाफ लगातार लड़ते रहो। उसमें कोई अवरोध न आने पाये। मैना लड़ते–लड़ते अपने प्राण त्याग देती है। प्रो0 सुवास कुमार लिखते हैं ''मैना के

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जीते जी उसके बाप और पति ने उसका श्राद्ध कर डाला, पर संयोग से ऐसा कि मैना इन दोनों के मौत के बाद भी जीवित रही, भाोशित वर्ग की जिजीविशा बनकर। तेजाब फैक्टरी वाले शोशकों ने मजदूरों को आदमी से कुत्ता बना दिया, औरतों को रंड़ी। शासन, शिक्षा, पुलिस, रोजगार चारों तरफ से रास्ता बंद। मार खाती, लुटती हुई मैना फिर भी खत्म नहीं होती।''[58]

सन्दर्भ

संजीव, धार, राधाकृश्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990, पृश्ठ 123
संजीव, धार, पृश्ठ 16
वही, पृश्ठ 57
वही, पृश्ठ 37
वही, पृश्ठ 143
कथाअंक, अक्टूबर 1992, पृश्ठ 161–162
संजीव : धार, पृश्ठ 208
वही, पृश्ठ 112
संपादक प्रो0 सुवास कुमार, कथाकार संजीव, पृश्ठ 289

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies